2018

हिन्दी - विभाग
डा० कविता कुमारी सिंह

B.A. III
विषय - भाषा की उत्पत्ति का सिद्धान्त

धातु सिद्धान्त (डिंग-डांगवाद) या रणन

इस सिद्धान्त के प्रवर्तक प्लेटो को माना जाता है। रणन सिद्धान्त के अनुसार शब्द और अर्थ में एक प्रकार का रहस्यात्मक नैसर्गिक संबंध है। संसार में प्रत्येक वस्तु की अपनी विशिष्ट ध्वनि हुआ करती है जो किसी वस्तु से आहत होने पर व्यक्त हो जाती है। जैसे यदि हथौड़े से किसी धातु, लकड़ी, ईंट पत्थर, शीशा आदि पर आघात करें, तो उनसे विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न होती हैं और ध्वनियों को सुनकर ही कोई पहचान [illegible] है कि ये किस धातु से उत्पन्न हुई। पर[illegible] में कोई वस्तु गिर जाने पर केवल उसकी

आवाज से ही हम पहचान लेते हैं कि क्या चिड़ा है। तात्पर्य यह कि प्रत्येक वस्तु की अपनी विशिष्ट ध्वनि होती है, जो आघात पड़ने पर सुनाई देती है।

सृष्टि के प्रारम्भ में मानव वाणी-विहिन था, किन्तु जब संसार में विभिन्न वस्तुओं के सम्पर्क में आया और उसके ऊपर जो प्रभाव पड़ा और उससे अनायास उस वस्तुओं के बोधक शब्द उसके मुँह से निक पड़े। इसी तरह संसार की समग्र वस्तुओं के लि शब्द बन गये। भाषा के निर्माण हो जाने पर मनुष्य की यह सहज शक्ति समाप्त हो गई।

यह सिद्धान्त शब्द और अर्थ में नैसर्गिक संबंध मानता है जो तर्कसंगत से अधिक रहस्यात्मक है। जैसे बाह्य वस्तुओं सम्पर्क होते ही मनुष्य शब्द बनाना चला गया सारे शब्द निष्पन्न हो गये वैसी उसकी शक्ति समाप्त हो गई। उसमें वैज्ञानिकता का बिलकुल है।

आवेग सिद्धान्त — इस सिद्धान्त के अनुसार हर्ष शोक, विस्मय, क्षोभ, क्रोध, घृणा आदि मनोभावों की सहज अभिव्यक्ति से जो ध्वनि उत्पन्न होती है, उसी से भाषा की उत्पत्ति हुई है। संवेदना या भाव की तीव्रता होने पर आप से आप ध्वनि निकल पड़ती है। जैसे हर्ष में वाह-वाह, शोक या कष्ट में आह, हाय, विस्मय में ऐं, तिरस्कार में छिः, धिक् आदि। जब भाषा का विकास नहीं हुआ था तो मनुष्य ऐसे ही ध्वनि से अपने मनोभावों को व्यक्त करता था। क्रमशः भाषण शक्ति का विकास हुआ और बाद में भाषा निर्मित हुई।

इस सिद्धान्त में अनेक दोष हैं:—

पहली बात यह है कि आवेगात्मक तीव्रता के ही बोधक है। इनका सीधा संबंध स्वाभाविक अभिव्यंजना से नहीं है। अतः यह संप्रेषण-प्रधान भाषा के सहज अंग नहीं कहला सकते।

इन शब्दों को मानसिक से अधिक

शारीरिक प्रतिक्रियाओं से साहचर्य है। शब्द सोच विचारकर नहीं बोले जाते। आवेग के अतिरेक की स्थिति में आप से आप मुँह से निकल पड़ते हैं। भाषा का चिन्तन से अविच्छेद्य संबंध है। और इन आवेग - व्यंजक शब्दों में चिन्तन का सर्वथा अभाव है।

इसके अतिरिक्त संगीत सिद्धान्त, प्रकृति सिद्धान्त, समन्वय सिद्धान्त आदि के बारे में भी भाषा वैज्ञानिकों ने विचार किया।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि जितनी खोजें हुई हैं, उनके प्रकाश में केवल इतना कहना ही संभव है कि भाषा की उत्पत्ति भावाभिव्यंजक, अनुकरणात्मक तथा प्रतीकात्मक शब्दों से हुई।